**माता सुंदरी महाविद्यालय में प्रथम वैश्विक विदुषी सम्मेलन- 2024**

ग्लोबल संस्कृत फोरम एवं माता सुंदरी महाविद्यालय, संस्कृतविभाग के संयुक्ततत्वावधान में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो० हरप्रीत कौर की अध्यक्षता में 21-22, मार्च, 2024 द्विदिवसीय प्रथम वैश्विक विदुषी सम्मेलन "**संस्कृत साहित्य में महिलाओं का योगदान : अनसुनी गाथाओं**" विषय पर अंताराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या ने माता सुंदरी जी को सशक्त स्त्री की प्रतिमूर्ति बताया। माता गुजरी, माता साहिब कौर,माई भागो के संघर्ष को युवा पीढ़ी की समक्ष रख उन्हें सशक्त बनने की प्रेरणा दी।संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में कला एवं संस्कृति मंत्रालय की मंत्री माननीया मीनाक्षी लेखी जी मुख्यातिथि रहीं। संगोष्ठी में उपस्थित विद्वत्जनों एवं छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि देश की बेटियों को "**शस्त्र**, **शास्त्र** और **शास्त्रार्थ** के लिए तत्पर रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति की आराधिका डॉ एच० लूसी० गेस्ट (इंग्लैंड) एवं आदरणीय महेन्द्र मिश्र (अमेरिका) ने प्राचीन काल के सैद्धांतिक पक्षों को उजागर कर स्त्री की सामाजिक भूमिका की प्रशंसा की।संगोष्ठी की सारस्वत अतिथि प्रोफेसर शशिप्रभा कुमार अध्यक्ष, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला ने बीजवक्तव्य में वैदिक मन्त्रों के आधार पर शिक्षित एवं सशक्त स्त्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए स्त्री के मातृत्व की महिमा बतायी।

संगोष्ठी के समापन सत्र में प्रतिष्ठित नृत्यांगना माननीया **सोनल मानसिंह** सांसद, राज्यसभा ने अपने वक्तव्य में **महाभारत** से द्रौपदी का प्रसंग लेकर नारी को सशक्त बनने की प्रेरणा दी। इस द्विदिवसीय अंताराष्ट्रीय संगोष्ठी में अमेरिका,कजाकिस्तान, चीन आदि दशाधिक देशों के विद्वानों ने हिस्सा लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृतविभाग के अध्यक्ष प्रो०ओमनाथ बिमली ने कहा कि नारी सदैव सम्माननीय है। डॉ० सुभाष सिंह ने धर्मशास्त्रीय दृष्टि से नारी विमर्श प्रस्तुत किया। द्वितीय दिवस प्रो० दयाशंकर तिवारी की अध्यक्षता में आरंभ हुआ। प्रो० मीरा द्विवेदी ने महिला नाटककारों पर प्रकाश डाला। जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के प्रो० जय प्रकाश नारायण एवं लक्ष्मीबाई महाविद्यालय की प्रो० अनीता शर्मा सत्राध्यक्ष की भूमिका में रहे। विशिष्ट वक्ता हिन्दू महाविद्यालय की प्रो० अनीता राजपाल ने थेरीगाथाओं के माध्यम से स्त्री की अश्रुत कथाओं का उल्लेख किया। प्रो० विजय शंकर द्विवेदी ने नारी की महत्ता को उद्घाटित किया।प्रो० शशि तिवारी ने **वेदेषु नारी** विमर्श किया। इन्दिरा गांधी कला केन्द्र के प्रो० धर्मचंद चौबे ने संस्कृत के प्रति अनुराग दिखाया।जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो० उपेन्द्र राव ने नारी की अनसुनी गाथाओं को प्रस्तुत किया। श्रीलाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मुरली मनोहर पाठक ने मातृदेवो भव की अवधारणा को स्पष्ट किया। न्याय दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान प्रोफेसर विष्णुपद महापात्रा ने संगोष्ठी में आशीर्वचन दिया। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के परामर्शदाता महाविद्यालय के आई० क्यू० ए० सी० निर्देशक डॉ० लोकेश कुमार गुप्ता एवं ग्लोबल संस्कृत फोरम के सचिव डॉ राजेश कुमार मिश्रा रहे एवं संगोष्ठी की संयोजिका डॉ कल्पना शर्मा एवं डॉ० बिन्दिया त्रिवेदी रही। सत्यवती महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो० अंजू सेठ, डॉ०

कुलदीप कुमार सहगल, डॉ० प्रीति पूजारा, डॉ० अंजना तिवारी, डॉ० वरदान वसा, डॉ०लक्ष्मी गौतम डॉ० हर्षा कुमारी, डॉ० मोनिका मिश्रा, डॉ० कामिनी कौर, डॉ० वन्दना भान, डॉ०सुचित्रा भारती,डॉ० रूचिका शर्मा, डॉ० प्रियंका चानना, डॉ० पंकजा घई के विशिष्ट व्याख्यान हुए। इस अंताराष्ट्रीय संगोष्ठी में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से 120 शोध पत्र पढ़े गए। डॉ० मीनू गोयल संगोष्ठी में समन्वयक की भूमिका में रही।